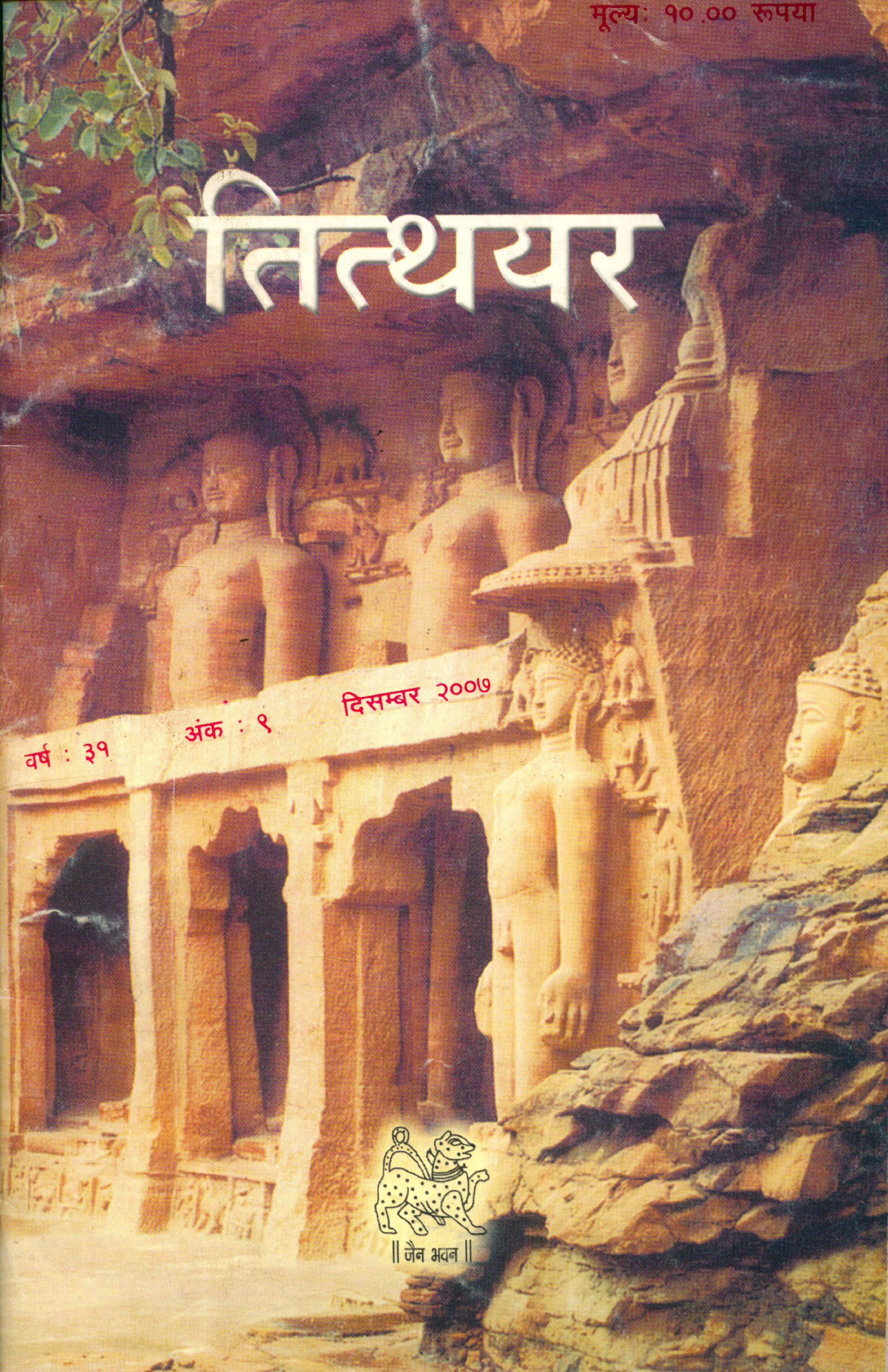
मूल्य: १०.०० रूपया
तित्थयर
दिसम्बर २००७
वर्ष : ३१
अंक : ९
जैन भवन

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३१ | अंक - ९ दिसम्बर | २००७

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये

पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Phone : 2268-2655,

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा,

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	आचार्य हेमचन्द्र की दृष्टि में भारतीय समाज	डॉ. जयशंकर मिश्र	४२३
२.	जैन इतिहास : अध्ययन विधि एवं मूलस्त्रोत	डॉ. सागरमल जैन	४२७
४.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	४४५

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

आचार्य हेमचन्द्र की दृष्टि में भारतीय समाज

डॉ. जयशंकर मिश्र

कलिकाल सर्वज्ञ जैन आचार्य हेमचन्द्र अपने युग के प्रकांड पंडित और अप्रतिम विद्वान थे। १२वीं सदी के भारतीय साहित्य और संस्कृति के वे एकमात्र प्रतिनिधि थे। साहित्य और भाषाशास्त्र के विभिन्न विषयों के अतिरिक्त तर्कशास्त्र मीमांसा और इतिहास संस्कृति के भी समान विचारक थे। चौलुक्य नरेश जयसिंह, सिद्धराज और कुमारपाल की राज्यसभा के ये अग्रणी और सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक थे। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषाओं पर इनका समान अधिकार था अतः इन्होंने विभिन्न विषयों पर विभिन्न भाषाओं में रचना की। प्रकृत द्वयाश्रय और कुमारपालचरित, सिद्धहेमशब्दानुशान, छन्दोनुशासन, लिंगानुशासन, उणादिगणसूत्र, देशीनाममाला, अभिधानचिन्तामणि, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, योगशास्त्र, प्रमाणमीमांसा, अनेकार्थ संग्रह आदि उनके प्रमुख ग्रन्थ है। इन ग्रन्थों में इन्होंने साहित्य के विभिन्न शाखाओं प्रशाखाओं पर नए सिरे से विचार तो किया ही है, साथ ही तत्कालीन भारतीय समाज पर भी अपनी दृष्टि से यत्र-तत्र प्रकाश डाला है, जो तत्कालीन समाज

नोट– पूर्वमध्ययुगीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक अवस्था का अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में लिखे गये तत्कालीन साहित्यिक ग्रंथों और विदेशी यात्रियों के व्रिवरणों के मूल का अध्ययन कर-प्रोफेसर डॉ. बुद्ध प्रकाश (अध्यक्ष, इतिहास विभाग, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, डायरेक्टर इंस्टीट्यूट आव इंडिक स्टडीज तथा डीन फैकल्टी अवु आट्र्स् कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब) ने सर्व प्रथम सम्यक्रूपेण विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जो पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से रिसर्च बुलेटिन के स्वतन्त्र पुस्तक रूप में Some Aspect of Indian Cul in the Eve of muslim Invasions शीर्षक से प्रकाशित है। उन्होंने अनेक ऐसे ग्रन्थों का उपयोग किया है जिन्हें इतिहासकारों ने अब तक उपेक्षित रखा था। उन ग्रन्थों के उपयोग से विद्वान इतिहासकार ने तत्कालीन समाज पर नवीन प्रकाश डाला है जिससे तद्युगान समाज पर विचार करने की प्रेरणा मिलती है तथा तत्त इतिहास के, एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होती है। प्रस्तुत निबन्ध में उक्त पुस्तक से अनेक स्थलों पर सहायता ली गई है।

चित्रण की नवीन उपलब्धि है। आज तक हेमचन्द्र के भारतीय समाज संबंधी विवरण उपेक्षित से रहे है। यहां तक कि, डॉ. ए. के. मजुमदार ने अपने 'चौलुक्याज आव गुजरात' ग्रंथ में, इस संबंध में, कुछ भी प्रकाश नहीं डाला है। प्रस्तुत निबन्ध में तत्संबंधी उल्लेखों का विश्लेषण और मूल्यांकन किया जा रहा है।

वर्ण व्यवस्था : भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था का अस्तित्व प्राचीनतम है। ये वर्ण चार थे, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।[१] आचार्य हेमचन्द्र के समय में भी चार वर्ण थे[२] इनका कथन है कि चार वर्ण में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र है।[३] हेमचन्द्र के समय से कुछ पूर्व भारत की यात्रा करने वाले अरब लेखक अलबरुनी[४] (मृत्यु १०४८ ई०) ने भारत के इन्हीं चार वर्णों का उल्लेख किया है।[५] वस्तुतः ये चार वर्ण प्राचीनकाल से चले आ रहे हैं। इस वर्णव्यवस्था का प्रेरण तत्व निश्चय ही व्यक्ति का व्यवसाय और कर्म ही था, जिस पर समाज विश्लेषकों की दृष्टि थी। प्राचीन काल से चार वर्णों में विभाजित भारतीय जाति मध्ययुग में भी तदनुरूप ही थी। यद्यपि वर्ण-विभाजन में जन्म गत आधार का बीज कुल और वंश नाम से आ गया था, तथापि वर्ण व्यवस्था में व्यक्ति के व्यवसाय और कर्म का महत्व अपेक्षाकृत अधिक था।[६]

ब्राह्मण : हिन्दूसमाज में ब्राह्मणों की स्थिति सर्वप्रमुख थी। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों में उनकी प्रधानता मान्य थी। प्राचीन धर्मशास्त्रों ने इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से मानी है।[७] कदाचित इसी कारण

१. शतपथ ब्राह्मण, ५, ५, ४९, निरुक्त ३८, अपण्डक जातक भदंत आनन्द कौशल्यायन, प्रथम खंड, पृ. १३६, १९४१ पाणिनिः ब्राह्मण क्षत्रियविटशूद्राः वर्णानामानुपूर्वेण पूर्वनिपातः २।२।३४ वा०)
२. चत्वार एवं वर्णाश्चातुर्वण्यंम् सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७।२।१६४।
३. चातुवर्ण्य द्विजक्षत्रवैश्यशूद्र नृणा भिद, अभिधान चिन्तामणि, ३।८०७।
४. अलबीरूनी का भारत प्रवास और भ्रमण – काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ६६, अंक १, सं. २०१८, पृ. ६८-७८
५. तहकीक-मालिल्-हिंद, पृ० ५० (अनुवादक, संखाओ अलवीरुनीज इंडिया)
६. पूर्वमध्ययुगीन भारतीय वर्णव्यवस्था, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी जर्नल वर्ष ८, अंक १, पृ० २२३-३४, ६२
७. महा०, शान्ति०, ७२, १७-१८; ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्च द्विजसत्तमाः।
पादोरुपक्षः स्थलता मुखतश्च समुद्गताः।। विष्णुपुराण,१.६.६.।

इनकी मर्यादापूर्ण सर्वोच्चता हिन्दू समाज में थी। आचार्य हेमचन्द्र का कथन है कि ब्राह्मण ब्रह्मा की संतान है।[१] यहां ब्रह्मा से उनका तात्पर्य हिन्दुओं के पौराणिक ब्रह्मा से नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक गुण-संपत्ति युक्त और सद्चरित्रता से विभूषित व्यक्ति ब्रह्मा के नाम से संबोधित किया गया है। अतः ब्राह्मण शब्द उनके लिये प्रयुक्त होता था।[२] हेमचन्द्र का दृढ़ मत है कि जो ब्राह्मण सद्चरित्रता, मनन शीलता आदि गुणों से रहित है तथा अपने मौलिक कर्तव्यों को त्यागकर आयुधजीवी (अर्थात् अस्त्र-शस्त्र से जीविकोपार्जन करता है) हो जाता है, वह मात्र नाम का ही ब्राह्मण होता है।[३] ब्राह्मणों के अन्य पर्यायवाची नामों में उन्होंने षट्कर्मा नाम भी दिया है।[४] शुक्र के अनुसार जो ज्ञान, कर्म, देवता आदि की उपासना देवता के आराधन में तत्पर, शांत, दांत और दयालु था, वही ब्राह्मण था।[५] षट्कर्मों में ये कर्त्तव्य थे। १. वेद पढ़ना, २. वेद पढ़ाना, ३. यज्ञ करना, ४. यज्ञ कराना, ५. दान लेना, और ६. दान देना[६] अलबांरूनी ने भी ब्राह्मणों के कुछ इसी प्रकार के कार्यों का निर्देश किया है। वह लिखता है कि ब्राह्मण के संपूर्ण जीवन में पुण्य के कार्य, दान देना है। वह निरन्तर पढ़े, यज्ञ करे[७] तथा वेद को पढ़ाए।[८] शुक्र का यह विकल्प है कि ब्राह्मण दांत (जितेन्द्रिय), कुलीन, मध्यस्थ (समबुद्धि), अनुद्वेगकारी (कोमल वचन) अटल परलोक से भीरु (डरनेवाला), धार्मिक, उद्योगी और क्रोधरहित हो।[९] हेमचन्द्र

---

१. ब्राह्मणोऽपत्यं ब्राह्मणः, सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७।४।५८।

२. अभिधान चिन्तामणि, ६, १४१९, लिंगानुशासन, पृ० १४२, पंक्ति २०।

३. ब्राह्मणानाम्नि–यत्रायुधजीविनः काण्डस्पष्टा नाम ब्राह्मणाः भवन्ति। आयुधजीवी ब्राह्मण एवं ब्राह्मणक इत्यन्त। सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७।१।१८४

४. अवदानं कर्म शुद्धं, ब्राह्मणस्तु त्रयीमुखः। भूदेवो वाडवो विप्रो द्वयग्राम्यां जाति-जन्मजाः वर्णज्येष्ठः सूत्रकण्ठः षटकर्मा मुखसम्भवः। अभिधान चिन्तामणि, ३, १८११-११।

५. ज्ञान कर्मोपासनाभिर्देवताराधनेरत। शांतोदांतोदयालुश्च ब्राह्मणश्चगुणौः कृतः।।शुक्र० ४।

६. अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पव्रत ।। मनु० १.८८।

७. तहकीकमालिल्हिद, पृ० २६१।

८. वही, पृ० २७०।

९. दांतं कुलीनंमध्यस्थमनद्वेगकारस्थिरम्।
परत्रभीरुं धर्मिष्ठामुधुक्तक्रोधवर्जितम् ।। शुक्र० ४.४३६।

ने ब्रह्मतेज उन्हीं ब्राह्मणों में वर्तमान बताया है, जिनमें आध्यात्मिक बल है।[१] अतः यह निर्विधारूप से कहा जा सकता है कि समाज में ब्राह्मणों से सद्आचरण सद्व्यवहार, सद्वृत्ति और सद्भाव से निवास करने की अपेक्षा की जाती थी। सभाश्रृंगार नामक ग्रंथ में ब्राह्मणों के लिये यह निर्देश किया गया है कि जो धोती और उत्तरीय धारण करे, सिर भद्र रखे तथा शिखा फहराए, भाल पर तिलक लगाए, गायत्री मंत्र का जप करे, दिन में तीन बार संध्या करे, प्रातः स्नान करे, वेद पढ़े, वेदान्त का ज्ञाता हो, सिद्धान्त पर चर्चा करे, देव, गुरु, ऋषि और मित्र का तर्पण करे, वही नैष्ठिक ब्राह्मण है।[२] इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि उपर लिखित निर्देशों के विपरीत चलने वाला प्रकृततः ब्राह्मणों की श्रेणी में नहीं आता था। ऐसा लगता है कि हेमचन्द्र के काल में ब्राह्मण अपने स्वाभाविक कर्त्तव्यों से विमुख होने लगे थे तथा विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में रुचि लेने लगे थे, इसी लिए हेमचन्द्र ने उन्हें केवल नाम का ब्राह्मण कहा है और उनके ब्राह्मणेत्तर कर्त्तव्यों की भर्त्सना की है। हेमचन्द्र स्वयं कहते हैं कि कलिंग में ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा नहीं है।[३] इस अप्रतिष्ठा का कारण अपने कर्तव्यों से च्युत होना तो है ही, साथ ही उनकी वैमनस्यता भी है।[४] वे एक दूसरे धर्मावलंबियों के प्रति द्वेष-भाव रखते थे, क्योंकि हेमचन्द्र ने ब्राह्मणश्रमणम् का उदाहरण देकर उनके मनोमालिन्य का संकेत किया है।

क्रमशः

---

१. सूत्र - ब्रह्मवर्चसम - सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७।३।८३।

२. उत्तरासंग धोती, सऊतरिऊ जनोइ, हाथि प्रबीती,
सिरु भद्रियउं, सिखा फरहरती, तिलकु वधारियउ,
गात्री सारु, त्रिकाल संध्याराधनु, प्रभात स्नानु, नित्यदानु।
वेद पढ़ाई, वेदान्त जाणइ, सिद्धान्त बखाणइ,
देव तर्पणु, गुरु तर्पणु, ऋषि तर्पणु, पितृ तर्पणु,
इसउनैष्टिकु ब्राह्मणु। सभाश्रृंगार शब्दानुशासन का० ना० प्र० सभा, पृ० १४८।

३. न कलिंगेषु ब्राह्मण महत्तमम् सिद्धहेमशब्दानुशासन, ५।२।११।

४. नित्यवैरस्य, वही, ३।१।१४१।

जैन इतिहासः अध्ययन विधि एवं मूलस्त्रोत

प्रो. सागरमल जैन

समग्र एवं संश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता :

भारतीय संस्कृति के सम्यक् ऐतिहासिक अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि उसकी प्रकृति को पूरी तरह से समझ लिया जाये। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारतीय संस्कृति एक संशिलष्ट संस्कृति है। वस्तुतः कोई भी विकसित संस्कृति संश्लिष्ट संस्कृति ही होती है, क्योंकि उसके विकास में अनेक संस्कृतियों का अवदान होता है। भारतीय संस्कृति को हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि चारदीवारी में अवरुद्ध करके कभी भी सम्यक् रूप से नहीं समझा जा सकता है। जिस प्रकार शरीर को खण्ड-खण्ड कर देखने से शरीर की क्रिया-शक्ति को नहीं समझा जा सकता है, ठीक उसी प्रकार भारतीय संस्कृति को खण्डों में विभाजित करके देखने से उसकी आत्मा ही मर जाती है। अध्ययन की दो दृष्टियां होती है विश्लेषाणत्मक और संश्लेषणात्मक। विश्लेषणात्मक पद्धति तथ्यों को खण्डों में विभाजित करके देखती है, तो संश्लेषणात्मक विधि उसे समग्र रूप में देखती है। भारतीय संस्कृति के इतिहास को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसके विभिन्न घटकों अर्थात् हिन्दू, बौद्ध, जैन परम्पराओं का समन्वित या समग्र रूप में अध्ययन किया जाये। जिस प्रकार एक इंजन की प्रक्रिया को समझने के लिए न केवल उसके विभिन्न घटकों अर्थात् कल-पुर्जो का ज्ञान आवश्यक है, अपितु उनके परस्पर संयोजित स्वरूप को तथा एक अंग की क्रिया के दूसरे अंग पर होने वाले प्रभाव को भी समझना होता है। सत्य तो यह है कि भारतीय इतिहास के शोध के संदर्भ में अन्य सहवर्ती परम्पराओं के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति का समग्र इतिहास प्रस्तुत ही नहीं किया जा सकता।

कोई भी धर्म और संस्कृति शून्य में विकसित नहीं होती है, वे अपने देश-काल तथा अपनी सहवर्ती अन्य परम्पराओं से प्रभावित होकर ही अपना स्वरूप ग्रहण करती है। यदि हमें हिन्दू बौद्ध या जैन किसी भी भारतीय सांस्कृतिक धारा के इतिहास का अध्ययन करना है, तो उनके देशकाल और परिवेश को तथा उनकी सहवर्ती परम्पराओं के प्रभाव को सम्यक् प्रकार से समझना होगा। भारत के सांस्कृतिक इतिहास को समझने और उसके प्रामाणिक लेखन के लिए एक समग्र किन्तु देशकाल सापेक्ष दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है।

ऐतिहासिक अध्ययन के लिए जहाँ एक ओर विश्लेषण दृष्टिकोण आवश्यक है वहीं दूसरी ओर एक समग्र दृष्टिकोण भी आवश्यक है। भारतीय ऐतिहासिक अध्ययन का यह दुर्भाग्य रहा है कि उसे विभिन्न धर्मों और परम्पराओं के एक घेरे में आबद्ध करके अथवा उसके विभिन्न पक्षों को खण्ड खण्ड करके देखने का प्रयत्न हुआ है। अपनी आलोचक और विश्लेषणात्मक दृष्टि के कारण हमने एक दूसरे की कमियों को ही अधिक देखा है। मात्र यही नहीं, एक परम्परा में दूसरी परम्परा के इतिहास को और उसके जीवन मूल्यों को भ्रान्त रूप से प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के लेखन में पहली भूल तब हुई, जब दूसरी परम्पराओं को अपनी परम्परा में निम्न दिखाने के लिये, उन्हें गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया। प्रत्येक परम्परा की अगली पीढ़ियाँ दूसरी परम्परा के उस गलत प्रस्तुतीकरण को ही आगे बढ़ाती रही। दूसरे शब्दों में कहे तो भारतीय संस्कृति और विशेष रूप से भारतीय दर्शन में प्रत्येक पक्ष ने दूसरे पक्ष का विकृत चित्रण ही प्रस्तुत किया। मध्यकालीन दार्शनिक ग्रन्थों में इस प्रकार का चित्रण हमें प्रचुरता से उपलब्ध होता है।

सौभाग्य या दुर्भाग्य से जब पाश्चात्य इतिहासकार इस देश में आये और यहाँ के इतिहास का अध्ययन किया तो उन्होंने भी अपनी संस्कृति से भारतीय संस्कृति को निम्न सिद्ध करने के लिए विकृत पक्ष को उभार कर इसकी गरिमा को धूमिल ही किया। फिर भी पाश्चात्य

लेखकों में कुछ ऐसे अवश्य हुए हैं, जिन्होंने इसको समग्र रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया और एक के ऊपर दूसरी परम्परा के प्रभाव को देखने का भी प्रयत्न किया। किन्तु उन्होंने अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिए भारतीय संस्कृति की एक धारा को दूसरी धारा के विरोध में खड़ा कर दिया और इस प्रकार भारतीय संस्कृति की एकात्मकता को खण्डित किया। यदि हमें भारतीय संस्कृति का प्रमाणिक इतिहास प्रस्तुत करना है तो यह आवश्यक है, कि हमारे सांस्कृतिक इतिहास का एक समन्वित और समग्र दृष्टिकोण के आधार पर पुनर्मूल्यांकन हो,

आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ अध्ययन : जैन दृष्टिकोण :

किसी भी व्याख्या या अध्ययन के दो पक्ष होते हैं –

१. आत्मनिष्ठ और २. वस्तुनिष्ठ। आत्मनिष्ठ व्याख्या में व्याख्याता का अपना दृष्टिकोण प्रधान होता है और वह अपने दृष्टिकोण के अनुरूप तथ्यों को व्याख्यायित करता है, जबकि वस्तुनिष्ठ व्याख्या में तथ्य / घटनाक्रम प्रधान होता है और व्यक्ति निरपेक्ष होकर उसे व्याख्यायित करता है, फिर भी इतना निश्चित है कि व्याख्या व्याख्याता से पूर्णतः निरपेक्ष नहीं हो सकती है। व्याख्या में तथ्य / घटनाक्रम और व्याख्याता - व्यक्ति दोनों ही आवश्यक है। अतः कोई भी व्याख्या एकान्त रूप में आत्मनिष्ठ या वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकती है। उसके आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ दोनों ही पक्ष होते है।

ऐतिहासिक अध्ययन के लिये यह आवश्यक है कि उसका अध्ययन और ऐतिहासिक तथ्यों का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ आधार पर हो। दूसरे शब्दों में प्रामाणिक इतिहास लेखन, अध्ययन और मूल्यांकन के लिए वस्तुनिष्ठ या तथ्यपरक अनाग्रही दृष्टि आवश्यक है, इसमें किसी प्रकार का वैमत्य नहीं है। इतिहास लेखन, अध्ययन एवं मूल्यांकन सभी व्यक्ति से संबंधित है और व्यक्ति चाहे कितना ही तटस्थ और अनाग्रही क्यों न हो, फिर भी उसमें कही न कहीं आत्मनिष्ठ पक्ष का प्रभाव तो रहता ही है। ऐसे व्यक्ति तो विरल ही होते हैं जो निरपेक्ष और तटस्थ हों। दूसरे, इतिहास लेखन घटनाओं की व्याख्या है और इस व्याख्या में आत्मनिष्ठ

पक्ष की पूर्ण उपेक्षा भी संभव नहीं है। जैन दार्शनिकों ने अपने अनेकान्त सिद्धान्त के द्वारा यह स्थापित किया था कि प्रत्येक वस्तु, तथ्य और घटना अपने आप में जटिल और बहुआयामी होती है, उसकी व्याख्या अनेक दृष्टिकोणों के आधार पर संभव है। उदाहरण के रूप में ताजमहल का निर्माण एक ऐतिहासिक घटना है किन्तु ताजमहल निर्माता के चरित्र की व्याख्या विभिन्न रुचियों के व्यक्तियों के द्वारा विभिन्न प्रकार से की जा सकती है। किसी के लिये वह कला का उत्कृष्ट प्रेमी हो सकता है, तो किसी के लिये वह प्रेयसी के प्रेम में अनन्य आसक्त। कोई उसे अत्यन्त विलासी तो कोई उसे जनशोषण भी कह सकता है। इस प्रकार एक तथ्य की व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार से हो सकती है।

तथ्यों की जटिलता-एक सत्य :

तथ्य की जटिलता और व्याख्या सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोण की संभावना, ये दो ऐसे तथ्य है, जिन पर ऐतिहासिक मूल्यांकन निर्भर करता है। जिसे आज हिस्ट्रीओग्राफी कहा जाता है वह अन्य कुछ नहीं अपितु ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या के विभिन्न सिद्धान्तों के मूल्यांकन का शास्त्र है। यह मूल्यांकन विभिन्न दृष्टिकोणों पर आधारित होता है। अतः हम यह कह सकते है कि जैनों का अनेकान्त सिद्धान्त ऐतिहासिक मूल्यांकन के क्षेत्र में भी पूर्णतः लागू होता है। हमें उन दृष्टिकोणों या सिद्धान्तों की सापेक्षता को समझना है, जिसके आधार पर ऐतिहासिक मूल्यांकन होते है। जब तक ऐतिहासिक मूल्यांकन का हार्द नहीं समझ पायेंगे तब तक ऐतिहासिक मूल्यांकन एवं ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या मात्र किसी एक दृष्टिकोण पर या किसी एक सिद्धान्त पर संभव नहीं है। इतिहास न तो पूर्ण वस्तुनिष्ठ हो सकता है न पूर्ण आत्मनिष्ठ ही। जब भी हमें किसी इतिहास लेखक की किसी घटनाक्रम की व्याख्या का अध्ययन करना होता है तो हमें यह देखना होगा कि उस व्यक्ति का दृष्टिकोण क्या है। वह किन परिवेश और परिस्थितियों में उस व्याख्या को प्रस्तुत कर रहा है।

सहवर्ती परम्परा के प्रभाव और तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता :

यदि हम जैन परम्परा के इतिहास को देखें को हमें स्पष्ट रूप से यह दिखाई देता है कि किस प्रकार अन्य सहवर्ती धाराओं के प्रभाव से उसके ऐतिहासिक चरित्रों में पौराणिकता या अलौकिकता का प्रवेश होता गया और आचार विचार के क्षेत्र में परिवर्तन आता गया। इसका सबसे अच्छा उदाहरण स्वयं भगवान महावीर का जीवन चरित्र ही है। महावीर के जीवनवृत्त संबंधी सबसे प्राचीन उल्लेख आचारांग के प्रथम एवं द्वितीय श्रुत स्कंध में तथा उसके बाद कल्पसूत्र में उपलब्ध होते है। तत्पश्चात् निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णी साहित्य में उनके जीवन का चित्रण मिलता है। इसके बाद जैन पुराणों और चरित्रकाव्यों में उनके जीवनवृत्त का चित्रण किया गया है। यदि हम उन सभी विवरणों को सामने रखकर तुलनात्मक दृष्टि से उनका अध्ययन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भगवान महावीर के जीवन में किस प्रकार क्रमशः अलौकिकताओं का प्रवेश होता गया। आचारांग के प्रथम श्रुतस्कंध के नवें अध्ययन में महावीर एक कठोर साधक है, जो कठोर जीवन चर्या और साधना के द्वारा अपनी जीवन यात्रा को आगे बढ़ाते है, किन्तु आचारांग के द्वितीय श्रुत स्कंध से प्रारम्भ होकर कल्पसूत्र और परवर्ती महावीर चरित्रों में अलौकिकताओं का प्रवेश हो गया। अतः सामान्य रूप से प्राचीन भारतीय इतिहास और विशेष रूप से जैन इतिहास जो हमें पौराणिक ग्रंथों में उपलब्ध होता है, उसके ऐतिहासिक तथ्यों की खोज अत्यंत सावधानीपूर्वक करना होगा। यह कहना उचित नहीं है कि समस्त पौराणिक आख्यान ऐतिहासिक न होकर मात्र काल्पनिक है। दूसरी ओर यह भी सत्य है कि पुराणों और चरितकाव्यों में काल्पनिक अंश इतना अधिक है कि उसमें से ऐतिहासिक तथ्यों को निकाल पाना एक दुरूह कार्य है। जो स्थिति हिन्दू पुराणों की है वहीं स्थिति जैन पुराणों और चरित ग्रन्थों की भी है। यह भी सत्य है कि जैन इतिहास के लेखन के लिए हमारे पास जो आधारभूत सामग्री है वह इन्हीं ग्रन्थों में निहित है, किन्तु इस सामग्री का उपयोग अत्यंत सावधानीपूर्वक करना होगा।

जैन इतिहास के अध्ययन के स्त्रोत :

अ) जैन आगम, आगमिक व्याख्याओं एवं पुराणों के कथानक:

पुराणों के अतिरिक्त आगमिक व्याख्याओं विशेषतः निर्युक्ति, भाष्यों और चूर्णियों में भी अनेक ऐतिहासिक कथानक संकलित है किन्तु उनमें भी वही कठिनाई है जो जैन पुराणों में है। ऐतिहासिक कथानक और काल्पनिक कथानक दोनों एक दूसरे से इतने मिश्रित हो गए हैं, उन्हें अलग-अलग करने में अनेक कठिनाइयाँ है। सत्य तो यह है कि एक ही कथानक में ऐतिहासिक और काल्पनिक दोनों ही तत्व समाहित है और उन्हें एक दूसरे से पृथक करना एक जटिल समस्या है। फिर भी उनमें जो ऐतिहासिक सामग्री है उसका प्राचीन भारतीय इतिहास की रचना में उपयोग महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हैं। आगामिक व्याख्याओं में अधिकांश कथानक व्रत पालन अथवा उसके भंग के कारण हुए दुष्परिणामों को अथवा किसी नियम के संबंध में उत्पन्न हुई आपवादिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए दिये गये है। ऐसे कथानकों में चाणक्य कथानक, भद्रबाहु कथानक, कालक-कथा, भद्रबाहु द्वितीय और वाराहामिहिर आदि के कथानक ऐसे है, जिनका ऐतिहासिक महत्व है। मरण विभक्ति तथा भगवती आराधना की मूल कथाओं और उन कथाओं को लेकर बने बृहद्आराधना कथाकोश आदि का भारतीय इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्व है। इस सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा आगे करेंगे। जहाँ तक अर्धमागधी आगम साहित्य और आगमिक व्याख्या साहित्य का प्रश्न है उसमें ऐतिहासिक सामग्री न केवल प्रचुरमात्रा में उपलब्ध है, अपितु भारतीय इतिहास के अनेक अनुद्घाटित तथ्यों को उजागर करती है। सर्व प्रथम आचारांगसूत्र को ही लें। यद्यपि यह एक उपदेश एवं आचार प्रधान ग्रन्थ है, फिर भी इसके प्रथम श्रुतस्कन्ध के नवें उपधान श्रुत नामक अध्याय में महावीर का जो जीवनवृत्त उल्लेखित है, उसकी वस्तु निष्ठ सत्यता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। यद्यपि इसमें मूलतः महावीर के साधना काल का ही वर्णन है, यह महावीर के

गृही जीवन और संघ स्थापना के पश्चात् के जीवनवृत्त का वर्णन नहीं करता है फिर भी साधना काल में उनका विचरण क्षेत्र क्या रहा और इस काल में उन्हें क्या क्या कष्ट उठाने पड़े और उन्होंने किस प्रकार की साधना की, इसका एक पूर्ण प्रमाणिक विवरण उपलब्ध हो जाता है। यह विवरण पूर्णतः श्रद्धातिरेक और अतिशयोक्ति से रहित है। आचारांग के दूसरे श्रुतस्कन्ध के अन्तिम भावना नामक अध्ययन में भी महावीर का जीवनवृत्त मिलता है। इससे महावीर के दीक्षापूर्व और केवल्य की प्राप्त के पश्चात् के काल का विवरण भी मिल जाता है। प्रथम श्रुतस्कन्ध की अपेक्षा यह विवरण अधिक व्यापक एवं विस्तृत है और उनके जीवन को समग्रता से प्रस्तुत करता है, फिर भी इसकी वस्तुनिष्ठता एवं प्रमाणिकता को लेकर विद्वान पूर्ण आश्वस्त नहीं हो पाते है। इसमें उनके जीवनवृत्त के साथ अनेक अतिशय जुड़ गये हैं। आचारांग के पश्चात् महावीर के जीवन वृत के सम्बन्ध में क्वचित् उल्लेख सूत्र कृतांग के छटे अध्ययन में मिलते है, यद्यपि यह अध्ययन महावीर की स्तुति रूप है, फिर भी इसमें कुछ तथ्यात्मक जानकारी है, जैसे महावीर ने पार्श्वापत्य परम्परा से भिन्न होकर स्त्री-संपर्क और रात्रि-भोजन निषेध किया था (से वारिया इत्थी सरायभत्तं) सूत्रकृतांग में बाहुक, देवल, द्वेपायन, रामगुप्त, पराशर, उदक पेढाल पुत्र आदि (१/३/४) के जो उल्लेख हैं वे औपनिषदिक और बौद्ध स्त्रोंतो से भी पुष्ट होते हैं, अतः उनकी ऐतिहासिकता से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

इसी प्रकार समवायांग सूत्र (९/२९) में भगवान महावीर की परम्परा के नौ गणों का उल्लेख मिलता है। यद्यपि परवर्तीकाल में इन गणों को ११ गणधरों की ९ वाचनाओं से जोड़कर व्याख्यायित किया गया है, किन्तु मूल ग्रन्थ में गोदासगण से लेकर कोटिक आदि जिन गणों का उल्लेख है, वे अब वड्ढमाणु एवं मथुरा के प्रथम द्वितीय शताब्दी के अभिलेखों एवं कल्पसूत्र की पट्टावली से संपुष्ट होकर एक ऐतिहासिक तथ्य की जानकारी देते हैं। यहां यह ज्ञातव्य है कि इन गणों,

कुलों और उनकी शाखाओं के उल्लेख न केवल मथुरा के अभिलेखों के स्त्रोतों से सम्पुष्ट होते हैं, अपितु कल्पसूत्र के अंत में उल्लेखित पट्ट परम्परा से भी संपुष्ट होते है। कल्प सूत्र के तीन विभाग है उनमें जिन-चरित्र और पट्टावली ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर के जन्म, केवल-ज्ञान की उपलब्धि एवं निर्वाणस्थलों आदि की जानकारी हमें इसी ग्रन्थ से उपलब्ध होती है।

भगवती सूत्र में गौशालक, जामाली, जयन्ती एवं पाशर्वापत्य परम्परा के श्रावकों तथा अनेक नगरों और उनमें राजाओं आदि के जो उल्लेख हैं, उनकी ऐतिहासिकता को भी नकारा नहीं जो सकता है। भगवती सूत्र के पश्चात् ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृद दशा, अनुत्तरौपपातिक दशा और विपाकदशा में भी हमें कुछ ऐतिहासिक तथ्यों के उल्लेख प्राप्त होते है। यद्यपि इन ग्रन्थों के कथा विभाग में अनेक कथानक या तो प्रागैतिहासिक या पौराणिक है, किन्तु श्रेणिक, कुणिक आदि के अनेक कथानक ऐसे भी है, जिनकी ऐतिहासिकता में संदेह नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए उपासकदशांग के दशों उपासकों के, जो जीवनवृत्त हैं, उनमें उनकी संपत्ति आदि के सम्बन्ध में चाहे कुछ अतिरेक हो, किन्तु वे पूर्णतया काल्पनिक हैं ऐसा भी नहीं कहा जा सकता । इन ग्रंथों के कथानकों में संपत्ति, व्यवसाय, गोधन आदि के जो उल्लेख है वे महावीर काल की देश की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में सम्यक् सूचना प्रदान करते हैं।

इसी क्रम में उपांग साहित्य में राजप्रश्नीय नामक जो ग्रंथ है, उसमें भी राजा प्रसेनजित एवं राजाप्रदेशी के उल्लेख है, वे भी ऐतिहासिक दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि उनकी संपुष्टि बौद्ध त्रिपिटक के पसेनीयसुत्त से भी होती है। इसी प्रकार इसी राजप्रश्नीय ग्रंथ में जो जिनप्रतिमा एवं जिनमंदिरों के उल्लेख मिलते हैं, वे भारतीय पुरासम्पदा की विकास यात्रा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जा सकते हैं। क्योंकि इनमें ईस्वी सन् की प्रथम - द्वितीय शती की मंदिर संरचना के

सम्बन्ध में एक प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध होती है। उत्तराध्ययन का पिता-पुत्र का संवाद प्रमुख महत्त्व का है।

उपांग साहित्य के अन्य ग्रन्थ चाहे ऐतिहासिक सूचनाओं की दृष्टि से कम महत्वपूर्ण हो, किन्तु औपपातिकसूत्र में ईसा पूर्व में भारतीय संन्यासियों की जो विविध परम्पराएं अपने आस्तित्व में थी और उनमें साधना की जो विविध विधियां प्रचलित थी उनका एक प्रमाणिक विवरण उपलब्ध होता है।

इसी प्रकार ईसा पूर्व में भारतीय खगोलशास्त्र की मान्यताओं के संदर्भ में सूर्यप्रज्ञप्ति एवं चन्द्रप्रज्ञप्ति से भी महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है। जिसके माध्यम से हम भारतीय ज्योतिषशास्त्र की ऐतिहासिक विकासयात्रा को समझ सकते हैं, क्योंकि इन दोनों में सूर्य, चन्द्र आदि की गति सम्बन्धी जो उल्लेख है, वे वैदिक काल के हैं, या उनके समतुल्य है। इसी क्रम में छेदसूत्र, जो उत्सर्ग और अपवाद मार्ग की चर्चा करते हुए विभिन्न प्रकार के प्रायश्चितों का, विधान करते हैं, उनके माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विकास यात्रा को समझने में हमें सहायता मिल सकती है। इसी क्रम में उत्तराध्ययनसूत्र महावीर और पार्श्व की परम्पराओं की विभिन्नता एवं उनके समन्वय के सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। उसमें उल्लेखित कपिल, संजय, गर्दभालि आदि के कथानक भी ऐतिहासिक मूल्य के माने जा सकते हैं। यहां यह ज्ञातव्य है कि उत्तराध्ययन के गर्दभाली और विक्रमादित्य के कथानक में उल्लेखित गर्दभाली भिन्न व्यक्ति प्रतीत होते है। इसी प्रकार नन्दीसूत्र के प्रारम्भ में जैन आचार्यो का जो क्रमिक इतिहास वर्णित है, उसके भी ऐतिहासिक मूल्य को नकारा नहीं जा सकता। उसमें वर्णित सभी आचार्य ऐतिहासिक व्यक्ति है, चाहे उनके काल क्रम में क्वचित् मतभेद हो सकता है, किन्तु उनकी ऐतिहासिक सत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता।

इसी क्रम में ऋषिपालित द्वारा रचित देवेन्द्रस्तव नामक प्रकीर्णक में अशोक स्तम्भ के निर्माण कला की ऐतिहासिक पीढिका की सूचना हमें

मिलती है। अशोक स्तम्भ की रचना-कला का यह ग्रंथ महत्वपूर्ण साहित्यिक आधार है।

प्रकीर्णक साहित्य के अनेक ग्रंथ समाधिमरण की साधना से सम्बन्धित हैं, किन्तु इन ग्रंथों में समाधिमरण करने वाले जिन साधकों के उल्लेख हैं उनके नाम श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा के समाधिमरण सम्बन्धी साहित्य के अन्य ग्रन्थों से भी संपुष्ट होते हैं, अतः उनकी ऐतिहासिकता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकार जैनागम साहित्य की ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मूल्यवत्ता सिद्ध होती है। भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के सम्बन्ध में यदि इन ग्रन्थों का सहयोग लिया गया होता, तो निश्चित ही भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का एक नया स्वरूप ही हमें नजर आता है। भारतीय सांस्कृतिक विकास के इतिहास में जो पालि और प्राकृत स्त्रोतों की उपेक्षा हुई है उसके कारण इसका यथार्थ चित्रण हमारे समक्ष प्रस्तुत नहीं हो सका है।

जैन आगम साहित्य में कभी प्रश्न व्याकरण सूत्र का अंगीभूत रहा ऋषिभासित नामक ग्रंथ में औपनिषदिक, बौद्ध, निर्ग्रन्थ एवं अन्य श्रमण परम्पराओं के ४५ ऋषियों के उपदेश संकलित है। यह ग्रंथ अपनी भाषा-शैली एवं रचना-काल की अपेक्षा से प्राचीनतम अंग आगम आचारांग एवं सूत्रकृतांग का समकालिक प्रतीत होता है। इस ग्रंथ के नारद असित, देवल, पराशर, याज्ञवल्क्य, आरुणि, उद्दालक आदि औपनिषदिक ऋषियों का सारिपुत्र, महाकश्यप और वज्जीपुत्र आदि बौद्ध श्रमणों का, गोशालक आदि आजीवक श्रमणों का तथा पार्श्व और वर्धमान ऐसे जैन श्रमण परम्परा के महापुरुषों के उपदेशों का संकलन है। इन ऋषियों के उल्लेख औपनिषदिक, जैन और बौद्ध परम्परा के अन्य ग्रन्थों में भी मिलते हैं, जिससे इनकी ऐतिहासिकता और इनके उपदेशों की प्रमाणिकता को सम्यक् प्रकार से जाना जा

सकता है। इस प्रकार अर्धमागधी आगम साहित्य के इन ग्रन्थों में भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री संकलित है।

आगमिक मूल ग्रन्थों पर कालान्तर में निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, वृत्ति, विवरण, टिप्पण और टब्बे लिखे गये। इन सभी आगामिक व्याख्या ग्रन्थों में भी ऐतिहासिक महत्व की विपुल सामग्री भरी हुई है। कालक्रम की दृष्टि से आगमों पर सर्वप्रथम निर्युक्तियाँ लिखी गई। मेरी दृष्टि में निर्युक्तियों का काल ईसा की दूसरी तीसरी शताब्दी के लगभग माना जा सकता है और इनके रचनाकार के रूप में कल्पसूत्र की पट्टावली में उल्लखित गौतम गौत्रीय आर्यभद्र को माना जा सकता है। ज्ञातव्य है कि इन आर्यभद्र के नाम पर जो भद्रान्वय प्रचलित हुआ था, उसका उल्लेख भी लगभग ईसा की चौथी शताब्दी के विदिशा के रामगुप्त के अभिलेख के लगभग ६०० वर्ष पश्चात् तक के है। इन उल्लेखों में निर्ग्रन्थ संघ में जामालि आदि सात निह्नवों के होने के उल्लेख है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं प्रमाणिक लगते हैं। क्योंकि इन निह्नवों के कुछ सिद्धान्त नैयायिक एवं बौद्धों से प्रभावित लगते हैं। इसी प्रकार निर्युक्ति साहित्य में प्रसंगानुसार अनेक कथानकों के नाम निर्देश भी प्राप्त हो जाते हैं। जिनके ऐतिहासिक मूल्य को नकारा नहीं जा सकता। उदाहरण के रूप में आर्यवज्र के द्वारा भद्रगुप्त से पूर्व साहित्य का अध्ययन करना एवं उनका समाधि मरण करवाना आदि से संबंधित कथानक। निर्युक्तियों में पादलिप्त, तोसलिपुत्त आदि अनेक जैन आचार्यो के नाम भी उपलब्ध हो जाते हैं, जो जैन इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ी मानी जा सकती है।

निर्युक्ति साहित्य के पश्चात् ईसा की पांचवी छठी शताब्दी में इन निर्युक्तियों पर भाष्य लिखे गये। भाष्य प्राकृत पद्य में उपलब्ध होते है। इन भाष्यों में बृहद्कल्पभाष्य व्यवहारभाष्य, निशीथभाष्य और विशेषावश्यकभाष्य विशेष महत्वपूर्ण माने जाते है। उत्तराध्ययन, जीतकल्प आदि कुछ भाष्य ग्रंथ मिलते है जो आकार में संक्षिप्त हैं। इनमें भी ईसा की पांचवी-छठी शताब्दी तक की ऐतिहासिक सामग्री और विशेष रूप

से भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की सामग्री विपुल मात्रा में उपलब्ध है। इस सम्बन्ध में गम्भीर अध्ययन अभी भी आपेक्षित है। ऐतिहासिक दृष्टि से व्यवहारभाष्य में आर्यरक्षित, आर्यसमुद्र, आर्य मंक्षु, आर्य स्कन्दक, खुड्डगणि, गोविन्द, पुष्यभूति आदि के उल्लेख है।

भाष्यों के पश्चात् चूर्णियों का काल आता है। चूर्णियां संस्कृत मिश्रित प्राकृत में एवं गद्य में लिखी गई है। इन चूर्णियों में भी अनेक कथानक मिलते है। जो भगवान महावीर के काल से लेकर ईसा की छठी सातवीं शताब्दी तक के अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को उद्घाटित करती है। ऐसे कथानकों में स्थूलि भद्र का कथानक, चाणक्य का कथानक, कालक का कथानक और भद्रभाहु द्वितीय एवं वाराहमिहिर के कथानक ऐसे है, जिनका ऐतिहासिक मूल्य भी रहा हुआ है।

स्थूलिभद्र का कथानक नन्दसाम्राज्य की, चाणक्य का कथानक, मौर्यसाम्राज्य की, कालक का कथानक शकों के आगमन तथा विक्रमादित्य प्रथम के राज्यकाल का तथा भद्रबाहु द्वितीय एवं वराहमिहिर का कथानक गुप्तोत्तर काल की राजनैतिक व्यवस्थाओं को समझने के सम्यक् आधार माने जा सकते हैं।

आवश्यकचूर्णि में भरत द्वारा अष्टापद पर्वत पर स्थित जिनालयों की सुरक्षा हेतु यन्त्र चालित-लौह-मानव (रोबोट) स्थापित करने का जो उल्लेख है वह आज के वैज्ञानिक प्रगति के युग के लिये भी एक चुनौती है।

चूर्णियों के पश्चात् लगभग आठवीं शताब्दी से संस्कृत भाषा में आगमिक टीका ग्रंथ लिखे गये। इन ग्रन्थों में यद्यपि उनके पूर्व आगम और आगामिक व्याख्या साहित्य का ही उपयोग हुआ है, फिर भी इनमें ईसा की आठवीं शताब्दी से लेकर १३वीं शताब्दी तक के भारतीय इतिहास के संदर्भ में और विशेष रूप से जैन इतिहास के संदर्भ मैं अनेक ऐतिहासिक मूल्य की सामग्री हमें उपलब्ध हो जाती है। मुख्य रूप में इन टीका ग्रन्थों की, जो हस्तलिखित प्रतिलिपिया है, उनमें टीकाकार

के अतिरिक्त प्रतिलिपिकार अथवा जिनके अध्ययन के लिये (पठनार्थ) प्रतिलिपि लिखी गई उनका भी निर्देश मिलता है साथ ही जिस गृहस्थ ने ये प्रतिलिपियां करवाई है, उसका भी नाम निर्देश ही नहीं, कभी कभी तो पूरी वंशावली ही मिल जाती है। इस प्रकार ये टीका ग्रन्थ और विशेष रूप से उनकी ग्रन्थप्रशस्तियां भारतीय इतिहास और विशेष रूप से जैन इतिहास के महत्वपूर्ण स्त्रोत सिद्ध होते है।

ब) ऐतिहासिक चरित काव्य एवं स्थविरावलियाँ :

इसी प्रकार परवर्ती काल में अनेक ऐतिहासिक चरित काव्य भी लिखे गये हैं, जैसे–त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित, कुमारपालचरित, कुमारपालभूपालचरित, आदि जो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। ऐसे ही जैन आगमों विशेष रूप से कल्पसूत्र और नन्दीसूत्र के प्रारम्भ में जो स्थविरावलियाँ दी गयी है वह भी ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्व की है। उनमें दिए गये अनेक आचार्यों के नाम तथा उनके गण, कुल, शाखा आदि के उल्लेख मथुरा के अभिलेखों में मिलने से उनका ऐतिहासिक महत्व स्पष्ट है।

स) ग्रन्थ प्रशस्तियाँ :

ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से ग्रंथ प्रशस्तियों का भी अत्यन्त महत्व होता है। उनमें लेखक न केवल अपनी गुरु परम्परा का उल्लेख करता है, अपितु अनेक सूचनाएं भी देता है, जैसे यह ग्रंथ किसके काल में, किसकी प्रेरणा से और कहाँ लिखा गया। यह ठीक है कि ग्रंथ प्रशस्तियों में विस्तृत जीवन परिचय नहीं मिलता किन्तु उनमें संकेत रूप में जो सूचना मिलती है, वह इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है।

द) पट्टावलियाँ :

जैन परम्परा में अनेक पट्टावलियाँ (गुरु-शिष्य परम्परा) भी लिखी गयी है। उनमें आचार्यों के संबंध में उल्लेखित कुछ चमत्कारों को छोड़ दें तो शेष सूचनाएं जैन संघ के इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण और

उपयोगी कही जा सकती हैं। इन स्थविरावलियों और पट्टावलियों में न केवल आचार्य परम्परा का निर्देश होता है, अपितु उसमें कुछ काल्पनिक बातों को छोड़कर अनेक आचार्यों के व्यक्तित्व व कृतित्व के संबंध में महत्वपूर्ण सूचनाएं मिलती है। हिमवंत स्थविरावली और नन्दीसंघ पट्टावली जिनकी प्रामाणिकता के संबंध में कुछ प्रश्नचिन्ह हैं, फिर भी वे जैनधर्म के इतिहास को एक नवीन दिशा देने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही परम्पराओं में आज भी शताधिक ऐसी पट्टावलियाँ उपलब्ध होती हैं, जिनके इतिहास लेखन सम्बन्धी महत्व को हम नहीं नकार सकते। उनका ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यांकन आवश्यक है।

ई) प्रबन्ध ग्रन्थ :

पट्टावलियों के अतिरिक्त अनेक प्रबन्ध भी (१२वीं से १५वीं शती तक) लिखे गये जिनमें कुछ विशिष्ट जैनाचार्यों के कथानक संकलित हैं। इनमें हेमचन्द्र कृत परिशिष्टपर्व, प्रभाचन्द्र कृत प्रभावकचरित, मेरूतुंग कृत प्रबंधचिन्तामणि, राजशेखर कृत प्रबंधकोश आदि प्रमुख हैं। इन संबंधों के कथानकों में भी अनेक स्थलों पर आचार्यों के चरित में अलौकिकता का मिश्रण है। आज उनकी सत्यता का हमारे पास कोई आधार नहीं है, फिर भी इन प्रबन्धों में अनेक ऐतिहासिक तथ्य निहित हैं।

एफ) चैत्यपरिपाटियाँ :

स्थविरावलियों, पट्टावलियों, प्रबन्धों के अतिरिक्त जैन इतिहास की महत्वपूर्ण विद्या चैत्य-परिपाटियाँ या यात्रा विवरण हैं जिनमें विभिन्न तीर्थों के निर्देश तो है ही, उनके संबंध में अनेक ऐतिहासिक सत्य भी वर्णित हैं। मरूगुर्जर में हमें सैकड़ों चैत्य परिपाटियाँ (१६वीं से १९वीं शती तक) उपलब्ध होती हैं। जिनमें आचार्यों ने अपने यात्रा विवरणों को संकलित किया है। इसी से मिलती जुलती एक विद्या तीर्थमालाएं हैं। यह भी चैत्य परिपाटी और यात्रा विवरणों का ही एक रूप है। इसमें लेखक विभिन्न तीर्थों का विवरण देते हुए तीर्थ के अधिनायक की स्तुति करता है। इसमें लेखक विभिन्न तीर्थों का विवरण देते हुए तीर्थ के अधिनायक

की स्तुति करता है। यद्यपि परवर्ती काल की तीर्थमालाओं में मुख्य रूप से तीर्थनायक की प्रतिमा के सौन्दर्य वर्णन को प्रमुखता मिली है किन्तु प्राचीन तीर्थमालाएं मुख्य रूप से नगर, राजा और वहाँ के सांस्कृतिक परिवेश का भी विवरण देती है और इस दृष्टि से वे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करती हैं। अधिकांश तीर्थमालाएं १५वीं से १८-१९वीं शताब्दी के मध्य की है और इनकी भाषा मुख्यतः मरु-गुर्जर हैं किन्तु विविध तीर्थकल्प आदि कुछ तीर्थमालाएं प्राचीन भी हैं। इसी क्रम में जैनाचार्यों ने अनेक नगर वर्णन भी लिखे हैं, जैसे नगरकोट कांगड़ा वर्णन। नगर वर्णनों संबंधी इन रचनाओं में न केवल नगर का नाम है अपितु उनकी विशेषताएं तथा उन नगरों से संबंधित उस काल के अनेक ऐतिहासिक वर्णन भी निहित है। चैत्य परिपाटियाँ और तीर्थमालाओं की एक विशेषता यह होती है कि वे उस नगर या तीर्थ के संबंध में पूरा विवरण देती हैं।

जी) विज्ञप्ति पत्र :

एक अन्य विधा जिसमें इतिहास संबंधी सामग्री व नगर-वर्णन दोनों ही होते हैं वे विनती पत्र कहे जाते हैं। विज्ञप्ति पत्र वस्तुतः एक प्रकार के विनंति पत्र है, जिसमें किसी आचार्य विशेष से उनके नगर में चातुर्मास करने का अनुरोध किया जाता है। ये पत्र इतिहास के साथ ही साथ कला के भी अनुपम भंडार होते हैं। इनमें जहाँ एक ओर आचार्य की प्रशंसा और महत्व का वर्णन होता है, वहीं दूसरी ओर उस नगर की विशेषताओं के साथ साथ नगर निवासियों के चरित्र का भी उल्लेख होता है। लगभग १५वीं शती से प्रारम्भ होकर १६-१७वीं शती तक के अनेक विज्ञप्ति पत्र आज भी उपलब्ध है। ये विज्ञप्ति पत्र जन्मपत्री के समान लम्बे आकार के होते है, जिसमें नगर के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सुन्दर चित्र भी होते हैं, जिससे इनका कलात्मक महत्व भी बढ़ जाता है।

इस प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि आगम, आगमिक व्याख्यायें, स्वतंत्र ग्रंथों की प्रशस्तियों धार्मिक कथानक, चरित ग्रंथ,

प्रबंध साहित्य, पट्टावलियाँ, स्थविरावलियों, चैत्य परिपाटियाँ, तीर्थमालाएं, नगर वर्णन और विज्ञप्ति पत्र आदि सब मिलकर सामान्य रूप से भारतीय इतिहास विशेषतः जैन इतिहास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

एच) अभिलेख :

इन साहित्यिक स्त्रोतों के अतिरिक्त अभिलेखीय स्त्रोत भी जैन इतिहास के महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। इनमें परिवर्तन-संशोधन की गुंजाइश कम होने तथा प्रायः समकालीन घटनाओं का उल्लेख होने से उनकी प्रामाणिकता में भी सन्देह का अवसर कम होता है। जैन अभिलेख विभिन्न उपादानों पर उत्कीर्ण मिलते हैं जैसे-शिला, स्तम्भ, गुफा, धातु, प्रतिमा स्मारक, शययापट्ट, ताम्रपट्ट आदि पर। ये अभिलेख मुख्यतया दो प्रकार के हैं (१) राजनीतिक और (२) धार्मिक। राजनीतिक या शासन पत्रों के रूप में जो अभिलेख हैं वे प्रायः प्रशस्तियों के रूप में हैं जिसमें राजाओं की विरूदावलियाँ, सामरिकविजय, वंश परिचय आदि होते है। धार्मिक अभिलेखों में अनेक जैन जातियों के सामाजिक इतिहास, जैनाचार्यों के संघ, गण, गच्छ आदि से संबंधित उल्लेख होते हैं।

जैन अभिलेखों की भाषा प्राकृत, संस्कृत, कन्नडमिश्रितसंस्कृत, कन्नड़, तमिल, गुजराती, पुरानी हिन्दी आदि है। दक्षिण के कुछ लेख तमिल में तथा अधिकांश कन्नड़ मिश्रित संस्कृत में हैं, जिनमें ऐहोल प्रशस्ति, राष्ट्रकूट गोविन्द का मन्ने से प्राप्त लेख, अमोधवर्ष का कोन्नर शिलालेख आदि मुख्य है।

प्राकृत भाषा के अभिलेखों में अजमेर से ३२ मील दूर बारली (बड़ली) नामक स्थान से प्राप्त एक जैन लेख, जो एक पाषाण स्तम्भ पर ४ पंक्तियों में खुदा हैं, सबसे प्राचीन बत्या गया है। इस लेख की लिपि को स्व. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा ने अशोक से पूर्व का माना है। इस लेख को वीर निर्वाण संवत ८४ का माना जाता है। यद्यपि एक अन्य विद्वान ने इस अभिलेख का एक अंश उदयपुर म्युजियम में होने

का उल्लेख करते हुए इसे वीर निर्वाण संवत् ५८४ का सिद्ध किया है और इसका सम्बन्ध आयरक्षित से जोड़ा है। ई. पू. ३-२ शती से जैन अभिलेख बहुतायत से मिलते है। मात्र मथुरा से ही लगभग ई. पू. २शती से लेकर १२वीं शती तक के २०० से भी अधिक अभिलेख मिले हैं। मथुरा से प्राप्त ये अभिलेख प्राकृत, संस्कृत मिश्रित प्राकृत में तथा संस्कृत में है। इन अभिलेखों का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि इनकी पुष्टि कल्पसूत्र और नन्दीसूत्र की स्थविरावलियों से भी होती है। इससे पूर्व कलिंग नरेश खारवेल का उड़ीसा के हाथी गुंफा से प्राप्त शिलालेख एक ऐसा अभिलेख है जो खारवेल के राजनीतिक क्रिया-कलापों पर प्रकाश डालने वाला एक मात्र स्त्रोत है। यह अभिलेख ने केवल ई. पू. प्रथम द्वितीय शती के जैन संघ के इतिहास को प्रस्तुत करता है, अपितु खारवेल के राज्यकाल व उसके प्रत्येक वर्ष के कार्यों का भी विवरण देता है। अतः यह सामान्य रूप से भारतीय इतिहास और विशेष रूप से जैन इतिहास की महत्वपूर्ण थाती है। खारखेल के इस अभिलेख में द्विपदात्मक नमस्कारमंत्र में नमोसव्व सिद्धाणं पाठ है, जिसकी पुष्टि अंगविज्जा के साहित्यिक स्त्रोत से भी होती है।

परवर्ती अभिलेख विशेषतः ५-६वीं शती के दक्षिण से प्राप्त अभिलेखों में चालुक्य पुलकेशी द्वितीय का रविकीर्ति रचित शिलालेख (६३४ई.) हथुंडी के धवल राष्ट्रकूट का बीजापुर लेख (९९७ई.) आदि प्रमुख है। दक्षिण से प्राप्त अभिलेखों की विशेषता यह है कि उनमें आचार्यों की गुरु परम्परा, कुल, गच्छ आदि का विवरण तो मिलता ही है साथ ही अभिलेख लिखवाने वाले व्यक्तियों व राजाओं के संबंध में भी सूचना मिलती है। दक्षिण के इन्हीं अभिलेखों से जैनधर्म के यापनीय और कूर्चक सम्प्रदायों की सूचना मिलती है। साथ ही हलसी के एक अभिलेख से पांचवीं शती में उत्तरी कर्नाटक में श्वेताम्बरों की उपस्थिति की सूचना मिलती है। इस कालतक श्वेताम्बर और दिगम्बरों के मन्दिर

अलग अलग नहीं होते थे और श्वेताम्बर भी नग्नमूर्ति की ही उपासना करते थे, यह भी ज्ञात होता है।

अन्य प्रमुख अभिलेख कक्क का घटियाल प्रस्तर लेख (वि. सं. ९१८), कुमारपाल की बडनगर प्रशस्ति (वि. सं. १२०८), विक्रमसिंह कछवाहा का दूबकुण्ड लेख (१०८८ई.), जयमंगलसूरि रचित चाचिंग-चाहमान का सुन्धापर्वत अभिलेख आदि हैं, जिनसे धार्मिक इतिहास के साथ ही साथ राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास भी ज्ञात होता है।

इसी प्रकार जैन साहित्यिक व अभिलेखीय दोनों ही स्त्रोतों से महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है। हमें यह समझ लेना चाहिये कि जैन विद्वानों, रचनाकारों ने भारतीय इतिहास के लिए हमें महत्वपूर्ण अवदान दिया है, जिसका सम्यक् मूल्यांकन और उपयोग अपेक्षित है। हम इतिहासविदों से अनुरोध करते हैं कि ये अपने अध्ययन एवं भारतीय इतिहास की नवीन व्याख्या के लिए इन स्त्रोतों का भरपूर उपयोग करें, ताकि कुछ नवीन तथ्य सामने आ सकें।

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

हे कृपालु ! जन्म, बुढ़ापा और मौत आदि से समग्रतया डरावने इस संसार में, धर्म सामग्री वाला मनुष्य का जीवन मिलना यह एकमात्र आपकी ही कृपा का फल है। सत्तर कोडाकोडी सागरोपम वाली मोहनीय कर्म की मूल स्थिति में से उन्हत्तर कोडाकोडी सागरोपम से भी अधिक स्थिति का नाश होने पर ही इस जीव को आपका दर्शन मिल सकता है। आपकी सेवा पूजा और आपको समझने का मौका मिल सकता है। यह सब आपकी कृपा के बिना कैसे सम्भव हो सकता है? आप ही तो अनन्त शक्ति के परिचायक हैं, जन्म-मृत्यु की मजबूत जंजीर तोड़ने की मुझे ताकत दीजिए इत्यादि गहन भाव से स्तुति कर वह महल में आई।

उसे संकेत व इशारे मिल चुके थे अपनी आयु की अल्पता के। अब उसने आत्मशुद्धि के प्रयत्न प्रारम्भ का दिये और उसमें तन्मय हो गयी।

मन-वाणी और काया से किये गये दुष्कृत्यों व भवांतर में भी किये पापों की वह निन्दा गर्हा करने लगी। प्रायश्चित करने लगी। आत्मसाक्षी से बोलने लगी-

मैंने अपने आपको सदा विषय-कषाय से दूर रखा है। इनको मैंने परम अनर्थ माना है। मुझे कोई आशा-कांक्षा भी नहीं है। इस अनादि संसार में रहकर, अनेक योनियों में अनेक जीवों के संसर्ग-संबंध में रहकर पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति एवं दूसरे भी छोटे बड़े त्रस आदि जीवों को मन से, वचन से या काया से पीड़ा पहुंचाई हो यहाँ तक कि उनके प्राणों की भी हानि पहुंचाई हो अथवा ऐसे दुष्ट काम किये, करवाये या उनका अनुमोदन किया हो तो वे मेरे घोर पापमय अपराध

थे। मैं इन अपराधों की क्षमा मांगती हूँ। मेरा भी किसी ने कुछ अपराध किया हो उनको भी मैं क्षमा देती हूँ। वैर भाव का सम्पूर्णतया त्याग कर पूर्ण विश्वास के साथ मैंत्रीभाव स्वीकार करती हूँ।

राग द्वेष आदि आंतरिक एवं सभी सजीव-निर्जीव आदि बाह्य परिग्रह का मैं त्याग करती हूं। मैं अभी से अनशन स्वीकार करती हूं। इस शरीर में जहां तक प्राण हैं वहां तक मुझे चारों (सभी) प्रकार के आहार का त्याग है। सम्पूर्ण तृप्त हूं मैं, कुछ भी नहीं चाहिये मुझे।

ज्ञान-दर्शन-चारित्रमय मेरी एक और अकेली शाश्वत आत्मा है। माया के बन्धन यानी सम्बन्ध और संयोग ही दुःख है। दुःखदायी सारे सम्बन्ध मैंने निष्ठापूर्वक छोड़ दिये हैं। मैं सच्चे भावपूर्वक सम्यक्त्व-सामायिक, श्रुत-सामायिक एवं सर्वविरति-सामायिक स्वीकारती हूँ। श्री अरिहंतादि चार के अतिरिक्त इस भरे पूरे संसार में मुझे और कोई का आधार नहीं-आसरा नहीं, शरण भी नहीं।

राग-द्वेष, कषाय और अति दुर्जय मोहादि शत्रुओं को विश्व के मैदान में पछाड़कर विजय पाने वाले ओ अरिहंत। आप ही सच्चे योद्धा जेता और विजेता हो। मैं आपके शरण में निर्भय हूँ।

सर्व कर्मों का नाश कर स्वयं के शुद्ध स्वरूप में बिराजमान ओ परमपद के स्वामी! ओ सिद्ध-आत्मारामी। मैं आपके शरण में परम तृप्त हूँ।

मेरू पर्वत से भी अधिक बोझिल महाव्रतों के भार को सहज ही में उठा लेने के अद्भुत सामर्थ्यवान् श्री जिन शासन के परम आधार श्रृंगार, परोपकार में अति निपुण ओ मुनिश्रेष्ठों! मैंने आपकी शरण से आत्मानुशासन की साधना पाई है। आपकी शरण मुझे अवश्य आप तक पहुंचाएगी।

अट्ठारह पापस्थानकों से बचने का, इंद्रियों के निरोध एवं विषयों को परास्त करने का, तथा कर्म के मर्म को भेदने का जहां मुख्य उपदेश

है, ऐसे श्री तीर्थंकर परमात्मा के बताये हुए दयामय धर्म की मैं शरण लेती हूँ।

यों चारों शरण स्वीकार कर, जीवन में किये उत्तम कार्यों का अनुमोदन किया। सन्मार्ग के प्रदर्शक व प्रेरक गुरुओं के महान् उपकार का पुनः पुनः स्मरण किया। जाने अनजाने किये पापों की नन्दा गहां की और अपनी आत्मा को समता से सुवासित किया।

इस तरह फाल्गुन की पूर्णिमा को सुदर्शना ने अद्भुत बल-वीर्य व पराक्रम प्रकट कर अत्यन्त वीर्योल्लास भावोल्लास पूर्वक अनशन स्वीकार किया। अपनी आत्मा को प्रबल व निर्भय बनाया।

गर्मी का मौसम शुरु हो गया थी लेकिन सुदर्शना को परम शान्ति थी, वह दिन प्रतिदिन तेजस्विनी व प्रफुल्ल मालूम होती थी।

जब जीव जाग जाता है और स्वयं के अद्भुत-अपूर्व फायदे को देखता है तो उसे अलौकिक आनन्द होता है।

जिन पामर-कायर जीवों ने शरीर की ही सदा चिन्ता की है। शरीर के स्वामी (आत्मा) को कभी याद भी नहीं किया उन बेचारों की शरीर छूटने पर बड़ी बुरी दशा होती है।

माल कमाने व मान बचाने में माल का मालिक ही मारा जाता है इसे कौन जाने ? मात्र दुनियां की चीजों व इन चीजों के भरोसे में ही यह जीव भटक गया है। पदार्थों की लालच में पड़ा जीव अपने स्वरूप को भी भूल गया है। हमारा तो हमने काफी इकट्ठा कर लिया। पैसा-टका, कुटुम्ब-परिवार, इज्जत-आवरू, माल-असबाब, शान-शौकत, मान-मरतबा, हीरामाणक, महल-हवेली, ये सब तो हमने काफी इकट्ठा कर लिया। हमारा तो हमें बहुत दिखाई पड़ रहा है पर इसमें हम कहीं भी नहीं दिखाई देते। यह सब हमारा, लेकिन हम कहां? ना, हमारा तो कुछ हो ही नहीं सकता। हमारा कुछ है ही नहीं, यदि हमारा कुछ दिखता हो तो वह केवल पागलपन के कारण, समझदारी के कारण नहीं। समय के रहते, वक्त के बचते यह सब समझ में आये तो मनुष्य जन्म और

जीवन का कुछ अर्थ निकल सकता है, वर्ना आप उम्मीद तो काफी करोगे, पाओगे कुछ भी नहीं।

सुदर्शना उम्र में छोटी होते हुए भी समझदारी के कारण काफी बड़ी हो चुकी थी। क्योंकि वह अपने आपके कारण बड़ी थी। अपनी परछाई के कारण नहीं। मनुष्य को अपना विचार करना चाहिए कि यह क्या है? मेरे पास क्या है यह महत्व की बात नहीं है मैं क्या हूँ? यह खास बात है। वह जो बाहर से पायी थी उससे कई गुना उसके पास अन्तर वैभव था।

उसके रूप को बुढ़ापे की तनिक भी चिन्ता नहीं थी। उसकी आत्मा चिरंतन युवा थी।

अपने ही मन इन्द्रियों पर जिनकी हुकूमत नहीं चलती वे बेचारे आज्ञा-विलास के दास दूसरों पर क्या शासन करेंगे? आशा के दास तीनों लोक के गुलाम।

सुदर्शना तो स्वयं सावधान थी ही परन्तु उस पर अपार धर्म स्नेह और वात्सल्य रखने वाली शियलवती सदा छाया की तरह उसके पास रहती। मधुर-मंजूल स्वर से जिनवाणी का स्वाध्याय सुनाती। महापुरुषों की दृढ़ता आत्मबल की अपूर्व बातें वह कहती और आत्म आग्रति में सदा सावधान रहने की प्रेरणा देती।

सुदर्शना का संवेग रंग पक्का था और पराकाष्ठा पर पहुंचा था। वह सदा पंच परमेष्ठी महामंत्र के स्मरण में लीन रहती। आत्मानुशासन में निपुणमति वह दुष्कृत की गर्हा, सुकृत की अनुमोदना करती, क्षमा के अमृत कुंड में मग्न हो, श्री जिनप्रभु के चरणारविंद में समर्पित हो गुरु भगवंत के परम उपकार को अति कृतज्ञ भाव से याद करती और भव भव में चरण-शरण की याचना करती।

सुदर्शना के दिन यों उगते और बीतते थे। प्रतिपल उसका आनन्द, उल्लास बढ़ता चला जाता था। और उसका अंत आया। किसी

प्रकार की व्यथा, वेदना, ग्लानि या क्लेश के बिना वह अवसान पायी। उसके मुख पर अपार शांति, दिव्य तेज और मधुर मुसकान चमक रही थी। उसके नयन तृप्ति से भरे प्यारे लग रहे थे। धीरे धीरे जैसे ज्योति विलीन हो गयी। बिना हिले डुले, बिना कंपे, कम-वेशी हुए। कोई यकीन भी एकदम नहीं कर सकता कि इस जिस्म से रूह उड़ गई है। खाली पिंजड़ा पड़ा और हंसा उड़ चला है। शरीर निश्चेष्ट होते भी सब नजदीक आते और जैसे वह अभी बोलेगी ऐसा महसूस करते।

वैशाख सुदि पंचमी को प्रातःकाल में सुदर्शना ने दिव्यधाम में प्रयाण किया। वह स्वर्गवासी बनी।

अब सबको पता चला कि सुदर्शना ने कोई बड़ा तप नहीं उठा था लेकिन महाप्रस्थान की बड़ी तैयारी की थी। बहुत बड़े अर्से में बनने वाले कार्य को उसने अपने बड़े साहस के जरिये थोड़े से दिनों में कर लिया था। जिसके नाम मात्र से कायर लोग घबड़ा जाते हैं वैसा आजीवन अनशन उसने शेर की तरह लिया था और किसी भी प्रकार के प्रतिबंध बिना परलोक में प्रयाण किया था।

शियलवती द्वारा जब सबने यह जाना तो बड़े ताज्जुब से सुदर्शना की धीरज व हिम्मत को लोग सराहते रहे। थोड़े दिनों पूर्व तो वह आई थी। इतने से वक्त में इतने वड़े काम किये और चल भी दी कितने आराम से? विश्वास से? मुस्कान से? अलविदा! शुभ कामना! शुभास्ते सन्तु पन्थानाः। तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।

सुदर्शना की याद में छोटे बड़े सभी रो उठे। पशु भी उदास हो गये। दीन-दुःखी भी अपने आपको अनाथ महसूस करने लगे। आसमान भी गमगीन व श्यामल हो गया। शियलवती ने आज कई बरसों के बाद फिर अपने आपको अकेला पाया। सब सूना सूना हो गया। अरे शकुनिका बिहार भी खामोश हो गया। मानो भृगुकच्छ की रोनक बुझी-बुझी सी लगने लगी। सन्नाटा छा गया। सब क्या से क्या दिखने लगा। सुदर्शना कहां? उसका क्या?

ओ...... सुदर्शना ने अपनी दौलत, अस्मत, शोहरत और सूझ-बूझ का बड़ा फायदा उठाया था। झट पट अपना काम कर रवाना हो गयी वह।

लोग आये भी बैठे भी उठे भी खड़े हुए।

हम तेरी महफिल में जगह ढूंढते ही रह गये।

कहां, बैठें ये सोचते रहे– बैठे भी नहीं पाये कि जाने का वक़्त हो गया।

चम में कहां नशेमन बने कहां न बने?

ये सोचते रहे और बहार खत्म हुई।

बुलबुल सोचती रही कि यहां घोंसला बनाये या वहां? वह घोंसला तो ना बना पाई लेकिन बहार चली गई और पतझड़ आ गई।

बदनसीब लोग काफी कुछ पुण्याई और संभावना लेकर आते हैं लेकिन आत्मा के हित का आज करें, अब करें, ऐसे करें, ऐसे करे में रह जाते हैं और उन्हें मौत हड़प लेती है।

सुदर्शना इशान नाम के दूसरे वैमानिक स्वर्ग में अत्यंत समृद्धि-शाली रूपमती देवी बनी थी। अद्‌भुत रूप और अपूर्व कांतिवाली उस देवी को अनेक देव-देवियों के समूह ने घेर रखा था। कोई उसकी प्रशंसा तो कोई स्तुति करता था। उसका सामिप्य, संपर्क और साथ करने को सभी देव-देवियां मानो सदा आतुर रहते थे।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3-6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7-8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00
5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00

6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5B, Indian Mirror Street, Kolkata - 700 013
Phone: 2227- 5245/5240, Resi: 2246-7757

M/S. BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road, B-3/5 Gillander House,
Kolkata - 700 001, Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Kolkata - 700 017, Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016, Ph: 2226-2418,

M/S. SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
"Indian Silk House Agencies"
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: (S) 2464-1186

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072, Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF **SOHANRAJ VINAYMATI SINGHVI**
30B, New Road, Alipore, RBI, Staff Quarter &
Gadges Road (Inside lane) Kolkata - 700 027

M/S. GLOBE TRAVELS
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071, Ph: (O) 2282-8181-4/8780

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

M/S. LALCHAND DHARAMCHAND
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001, Ph: 2230-2074/8958, 2230-3187

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407, Etobicolse, Onterio m9 Cly8, 416-622-5583

M/S. COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street, Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001, Ph: 2248-5146/6941/3350,

M/S. ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4,
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029

SAROJ DUGAR
34/1J, Ballygunge Circular Road, Kolkata - 700 019, Ph: 2475 1458

M/S. VEEKEY ELECTRONICS
29/1B, Chandni Chowk, 3rd floor, Kolkata - 700 013, Ph: 2237-6255

M/S. KRISHNA JUTE COMPANY
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001,Ph: 2230-0871/9372, 3022937172

M/S. ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073, Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001, Phone : 2220-5229/5121

M/S. MOUJIRAM PANNALAL
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001, Ph : 3288-8088/2248-8086,

M/S. ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033

M/S. NAKODA METAL
32A Braboume Road, Kolkata - 700 001, Ph: 2235-2076, 2235-5701

M/S. MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069,
PH: 2248 0229/7030/2920/4346

M/S. SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007, Ph: 2273-1766, 2268-8846

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive, Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,

V.S. JAIN
Royal Gems INC.632 Vine Street, Suit # 421
Cincinnati OH 45202Phone : 1-800-627-6339

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue, Savoy, IL 61874-9495, USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Lucknow Road, PO. Sitapur-261001 (U.P.), Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street, 5th Floor, Room No. 534-535,
Kolkata - 700 001, Phone: 2210-3239, 2210-3253

RANJIT SINGHI
P15, New C.I.T. Road, Kolkata - 700 073

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है, वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007, Phone: (G) 2268-0900

In the Sweet Memory of my mother, LATE SOVABOTI DUSAJ
Manilal Rajendra Kumar Dusaj
Mobil : 9331041011, 9830142192

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road, Kalkata - 700 019,
Ph: (2475-1109/6835

M/s. MUKUND JEWELLERS
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006, Ph: 2259-3885,

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road, Kolkata - 700 020, Ph: 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001, Phone: 2242-3870

M/S. INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M/S. M.L. CHOPRA & CO.
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1, PH : 2230 5059 / 2230 1130,

M/S. STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5, Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016, Ph: (O) 2287-7880, 2287-8663,

MAHENDRA TATER
45/4A, Chakraberia Road (S)Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 1, Ph: 2230-7162, 2231-5540,

TAPAN KUMAR SAHELA
Shiv Bhawan, Police Line Road, Bhagalpur - 812001,
Ph: 0641-2421091, 2301041

APARAJITA BOYED
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia, Howrah - 711 106,
Ph: 2665-3666/2272

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane, Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

M/S. BADALIA GEMS PVT. LTD.
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006, Ph: 2554-8999/8997

M/S. CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450

जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।
WITH BEST WISHES

M/S. CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001,
Ph: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

WITH BEST WISHES
22, Strand Road, 2nd Floor, Kolkata - 700 001, Phone : 22131484

BIKASH CHHAJER
M/S. SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001, Ph: 2242-9265, 2210-9228,

KESARIA & CO.
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001, Ph: (O) 2248-8576/0669/1242

ARIHANT JEWELLERS
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - Ph: 3258-2284/9331030188

MANIK JAIN (Philatelic & numismatic)
One Moti Sil Street, Kolkata - 700 013
2228 8549, 2228 7777, Tele Fax : 2228 8888

In the memory of our father Late Surendra Singh Baid
SHRI HIREDRA SINGH BOYED
15/A, Chakraberia Road, Kolkata - 700 020 (M) 9831000458
SHRI RABINDRA SINGH BOYED (9231575198)
SHRI GYANENDRA SINGH BOYED (2363-1966)

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007,
Ph: 2268-8677, 2269-6097

MAHENDRA RAJ MEHTA
8, Brajadulal Street, Kolkata - 700 006, (M) : 9903052310

SHANTIPAL BHANSALI
23, N.S. Road 7th Floor Room No. 24, Ph: 2242 8633, (M) 9331023735

THE PRINCE OPTICAL CO.
72, Canning Street, Kolkata - 700 007, Ph : 2235 5544, 3022 0533

M/S. GEETA CATERERS
17M/1, Dover Terace, Kolkata - 700 019, Ph : 2461 8329, 9830051068

MOHANLAL JAIN & SONS.
9 India Exchange Place, Kolkata - 700 001, Ph: 2230 8255, 2230 8528

M/S. KESAVLAL MEHTA & COMPANY
154, Tarak Pramanik Road, Kolkata - 700 006, Ph: 2241 1163 (O)
48/33, Swiss Park, Kolkata - Ph: 3243 6469 (R)

M/S. TREND BYABAAR LTD.
Unit : Telbin Jute Mills, 24, N.S. Road, Kolkata - 700 001, Ph: 2231 2970/71/72 (O)

M/S. ROHINI PRINTERS
19/1B, Creek Row, Kolkata - 700 014, Ph: 2246 4610 (Press)
2216 5983, 2227 6510, 2446 4488

ज्ञानी के ज्ञान का सार यही है कि वह
किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करे।
अहिंसा और समता—यहीं शाश्वत धर्म है।
इसे समझे।

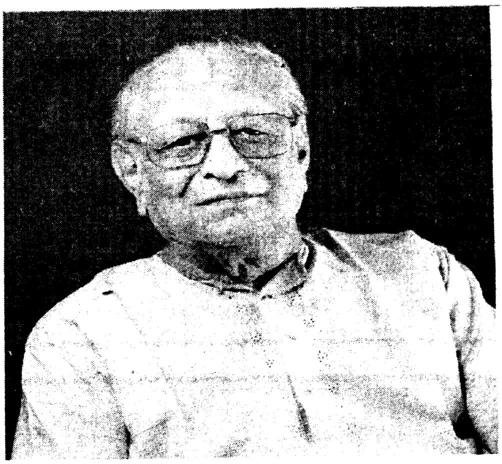

In the memory of my father

Late

Kantilal Srimal

Rabindra Srimal

Club Town
Block - 9 , Teghoria, VIP Road
Kolkata - 700 052
Phone : 2573 2152 / 2569 0230

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक
धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

M/S. B.W.M. INTERNATIONAL
&
BIKANER WOOLLEN MILLS

4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, (0151) 2522404, 2225400,

With Best Wishes

M/S.SURANA WOOLEN PVT. LTD.

67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills,
22201962, 22545065 Resi

With Best Wishes

M/S. WATERTECH ENGINEERS PVT. LTD.

ENVIRONMENTAL ENGINEERS & CONSULTANTS

1A, Raja Subodh Mullick Squre,
2nd Floor, Kolkata - 700 013
Phone : (033) 2237-5449, 2236-1229, 2221-9893, 2225-5346
Fax : 91-33-2221-9893, 91-33-2245-6558
e-mail : watertec@cal3.vsnl.net.in
Website : www.watertechengineers. com

**BRANCH OFFICE : D - 110, NIRMAL MARKET,
POWER HOUSE ROAD**

ROURKELA - 769001, **ORISSA,
TELEFAX** : (0661) 2507352

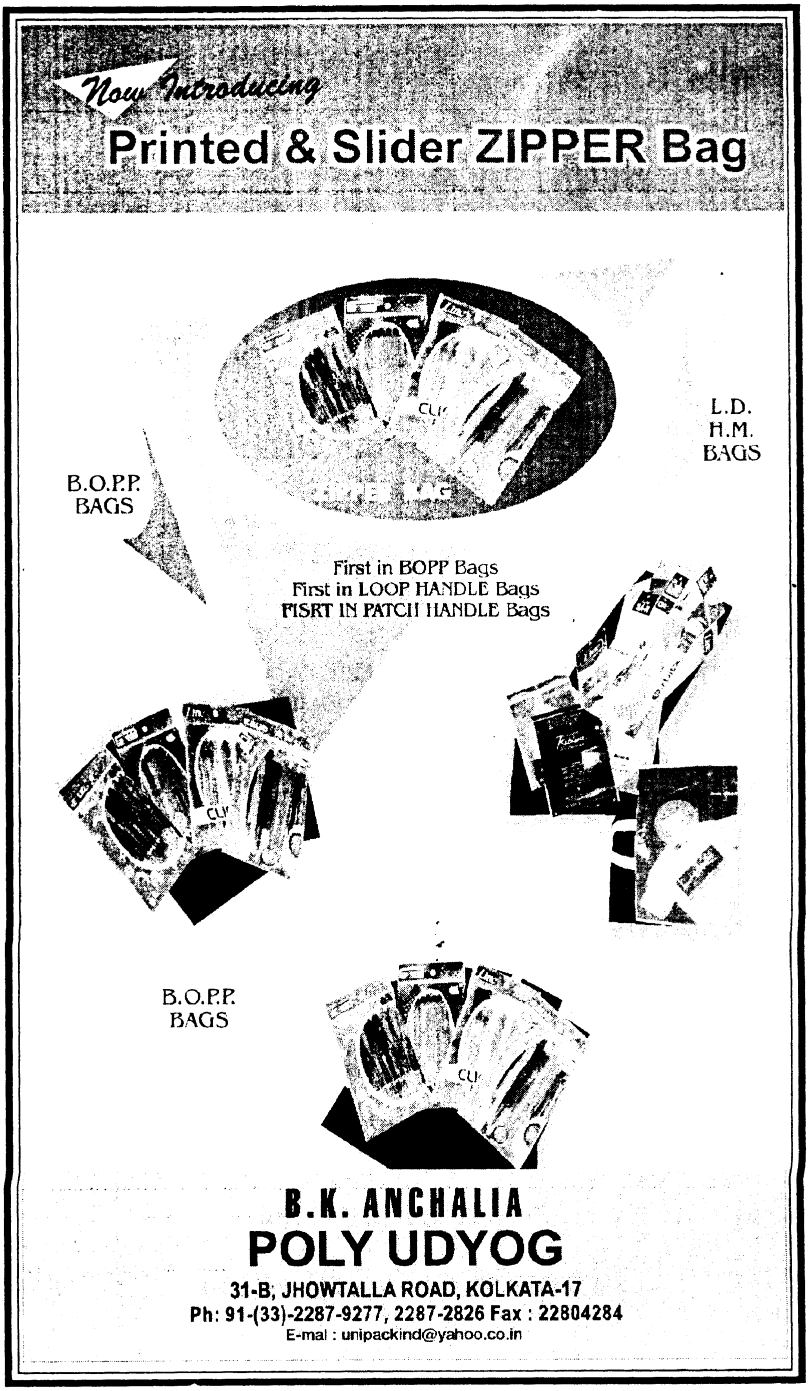
Now Introducing
Printed & Slider ZIPPER Bag
L.D.
H.M.
BAGS
B.O.P.P.
BAGS
First in BOPP Bags
First in LOOP HANDLE Bags
FISRT IN PATCH HANDLE Bags
B.O.P.P.
BAGS
B.K. ANCHALIA
POLY UDYOG
31-B, JHOWTALLA ROAD, KOLKATA-17
Ph: 91-(33)-2287-9277, 2287-2826 Fax : 22804284
E-mal : unipackind@yahoo.co.in

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar - 382 007.
Ph. : (079) 23276252, 23276204-05
Fax : (079) 23276249

शुभचिंतक

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶ Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶ Hygiene ▶▶ Baby Care ▶▶ Stationery ▶▶ other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9.00 pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

22, Camac Street, Pantaloons Building
Block-A, 3rd Floor, Kolkata - 700 017, Tel : 40091234/40091200
Fax : 40091303, e-mail : info@subhash.com., website : www.spml.co.in

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

BC JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXXI. No. 9
25th December 07

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 070/2007-09
R.N.I. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225